

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा, समस्तीपुर (बिहार)-848125

बुलेटिन संख्या-२३

दिनांक- बुधवार, ३० मार्च, २०२२



विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 33.8 एवं 19.2 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 88 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 49 प्रतिशत, हवा की औसत गति 3.3 कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 4.8 मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 8.4 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 23.7 एवं दोपहर में 39.6 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

**मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(30 मार्च से 03 अप्रैल, 2022)**

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 30 मार्च से 03 अप्रैल, 2022 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसार:-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल आ सकते हैं। हलाकि मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 35 से 38 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान 21 से 24 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 10 से 12 कि०मी० प्रति घंटा की रफतार से पुरवा हवा चलने की सम्भावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 65 से 75 प्रतिशत तथा दोपहर में 35 से 45 प्रतिशत रहने की संभावना है।

समसामयिक सुझाव

- गरमा मूंग तथा उरद की बुआई प्राथमिकता देकर 90 अप्रैल से पहले संपन्न करें। खेत की जुताई में 20 किलो ग्राम नेत्रजन, 85 किलोग्राम स्फूर, 20 किलोग्राम पोटेश तथा 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। मूंग के लिए पूसा विशाल, सम्राट, एस०एम०एल०-६६८, एच०यू०एम०-9६ एवं सोना तथा उरद के लिए पंत उरद-9६, पंत उरद-३9, नवीन एवं उत्तरा किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के दो दिन पूर्व बीज को कार्बेन्डाजीम २.५ ग्राम प्रति किलो ग्राम की दर से शोधित करें। बुआई के ठीक पहले शोधित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करें। बीजदर छोटे दानों के प्रभेदों हेतु २०-२५ किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर तथा बड़े दानों के प्रभेदों हेतु ३०-३५ किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई की दूरी ३० ग० से०मी० रखें।
- भिण्डी की फसल को लीफ हॉपर कीट की निगरानी करें। यह कीट दिखने में सुक्ष्म होता है। हरे रंग के छोटे कीट शिशु व प्रौढ दोनों भिण्डी की पत्तियों के निचले हिस्से में रहते हैं और रस चुसते हैं जिसके फलस्वरूप पत्तियाँ किनारे से पिली होकर सिकुड़ती हैं तथा प्यालानुमा आकार बनाकर धीरे धीरे सुखने लगती हैं। फलन प्रभावित होती है। इस कीट का प्रकोप दिखाई देने पर इमिडाक्लोप्रिड ०.५ मी०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- गरमा सब्जियों जैसे भिन्डी, नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा की बुआई अविलंब संपन्न करें। विगत माह बोयी गई सब्जियों की फसल में आवश्यकतानुसार निकाई-गुड़ाई करें। इन फसलों में कीट की निगरानी करें। कीट का प्रकोप फसल में दिखने पर मैलाथियान ५० ई०सी० या डाइमैथोएट ३० ई०सी० दवा का 9 मि० ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- प्याज फसल में थ्रिप्स कीट की निगरानी करें। थ्रिप्स प्याज को नुकसान पहुँचानेवाला मुख्य कीट है। यह आकार में अतिसुक्ष्म होता है तथा यह पत्तियों की सतह पर चिपक कर रस चुसते हैं जिससे पत्तियों पर दाग दिखाई देते हैं जो बाद में हल्के सफेद हो जाते हैं। थ्रिप्स की संख्या अधिक पाये जाने पर प्रोफेनोफॉस ५० ई०सी० दवा का 9.0 मि०ली० प्रति लीटर पानी या इन्डाक्लोप्रिड दवा का 9.0 मी.ली. प्रति 8 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- ओल की फसल की बुआई करें। बुआई के लिए गजेन्द्र किस्म अनुशंसित है। प्रत्येक 0.५ किलोग्राम के कन्द की रोपनी के लिए दूरी ७५x७५ से० मी० रखें। 0.५ किलोग्राम से कम वजन की कंद की रोपाई नहीं करें। बीज दर ८० किंवाटल प्रति हेक्टेयर की दर से रखें। बुआई से पूर्व प्रति गड्ढा ३ किलोग्राम सड़ी हुई गोबर, २० ग्राम अमोनियम सल्फेट या 90 ग्राम यूरिया, ३७.५ ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट एवं 9६ ग्राम पोटेशियम सल्फेट का व्यवहार करें। ओल की कटे कन्द को ट्राइकोर्डमा भिरीडी दवा के ५.० ग्राम प्रति लीटर गोबर के घोल में मिलाकर २०-२५ मिनट तक डुबोकर रखने के बाद कन्द को निकालकर छाया में 9०-9५ मिनट तक सुखने दें उसके बाद उपचारित कन्द को लगायें ताकि मिट्टी जनित बीमारी लगने की संभावना को रोका जा सके तथा अच्छी उपज प्राप्त हो सके।
- आम में मटर के दाने के बराबर की अवस्था हो गयी है, इस अवस्था में किए जाने वाले कृषि कार्य निम्न है। मटर के दाने के बराबर फल हो जाने के बाद इमिडाक्लोप्रिड (9७.८ एस०एल०)/9 मि०ली० दवा प्रति दो लीटर पानी में और हैक्साकोनाजोल 9 ग्राम/दो लीटर पानी या डाइनोक्वैप (४६ ई०सी०) 9 मिली दवा प्रति 9 लीटर पानी में घोलकर छिड़कने से मधुवा एवं चूर्णिल आसिता की उग्रता में कमी आती है। प्लेनोफिक्स नामक दवा/9 मिली प्रति ३ लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करने से फल के गिरने में कमी आती है।

आज का अधिकतम तापमान: ३२.४ डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से 9.३ डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ० गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

आज का न्यूनतम तापमान: २२.८ डिग्री सेल्सियस,
सामान्य से ५.० डिग्री सेल्सियस अधिक

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी